83

प्रभु के लिए फल लाना

यूहन्ना 15:1-12, एक निकट दृष्टि

ऊपरी कमरा, फसह का पर्व, निकट आ रहा क्रूस, चेलों को तैयार करने की आवश्यकता, यह सब यूहन्ना 14-16 के यीशु के अद्वितीय विदाई संदेश की तैयारी के लिए था। इस संदेश के दौरान, प्रभु ने दाख और डालियों पर एक चुनौतीपूर्ण संदेश दिया।

विद्वानों ने मसीह द्वारा इस्तेमाल किए गए परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए रूपक के बारे में अलग-अलग अनुमान लगाए हैं। शायद प्रभु भोज की स्थापना के लिए इस्तेमाल किया गया दाख का फल ही था। हो सकता है कि घर के एक ओर दाख की बारियां हों और वे झरोखों में से देखी जा सकती हों। यदि यीशु के संदेश का अंतिम भाग कहने से पहले वे ऊपरी कमरे से चले गए (देखें यूहन्ना 14:31), तो इस छोटे झुंड ने दाख की बारी देखी होगी। वे सुनहरी दाखों और अंगूर के गुच्छों को देखते हुए मन्दिर के पास से भी गुजरे होंगे। मसीह ने पुराने नियम से मिलती-जुलती उपमा का इस्तेमाल करना चाहा होगा (भजन संहिता 80; यशायाह 5; यिर्मयाह 2) निश्चय ही उसने दाख के रूपक का इस्तेमाल इसलिए भी किया होगा, क्योंकि इस रूपक को आसानी से समझा जा सकता था।

यीशु द्वारा इस रूपक के इस्तेमाल के प्रश्न से महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि वह यह उदाहरण देकर क्या हासिल करना चाह रहा था। कुछ समय बाद उसने पृथ्वी पर से चले जाना था। उसके चेलों ने उसके कार्य को आगे बढ़ाना था। उन्हें यह समझ होनी आवश्यक थी कि इसे *कैसे* पूरा किया जाए। प्रभु के इन बातों को कहने की पृष्ठभूमि यही है:

> सच्ची दाखलता मैं हूं; और मेरा पिता किसान है। जो डाली मुझ में है, और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती है, उसे छांटता है ताकि और फले। तुम तो उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है, शुद्ध हो। तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में: जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते। यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली के समान फैंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं। यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिए

> हो जाएगा। मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे। जैसे पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसे ही मैं ने तुम से प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे: जैसे कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है और उसके प्रेम में बना रहता हूं। मैं ने ये बातें तुम से इसलिए कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।
>
> मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक-दूसरे से प्रेम रखो। ... तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ; और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो, वह तुम्हें दे (यूहन्ना 15:1-12, 16)।

ये शब्द मूलत: प्रेरितों से कहे गए थे और उनके लिए इनका विशेष महत्व था (देखें 15:16)। परन्तु 1 से 12 आयतों के संदेश का सार सब मसीहियों के लिए है।

इन आयतों में तीन विषय मिलते हैं: (1) परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना, (2) परमेश्वर के लिए फल लाना और (3) परमेश्वर के प्रेम में बने रहना। तीन टांगों वाले स्टूल की टांगों की तरह, ये विषय एक-दूसरे को सहारा देते हैं। यह प्रवचन दूसरे अर्थात फल लाने के विषय पर और फल लाने के एक विशेष पहलू पर केन्द्रित रहेगा।[1]

फल लाने की वास्तविकता

सभी आयतों में, रेखांकित करने वाला विचार यह है कि दाख की टहनियों का कोई उद्देश्य है, और वह उद्देश्य *फल लाना* है (आयतें 2, 4, 5, 8)। किसान ऐसी डाली को बने नहीं रहने दे सकता, जो अपना उद्देश्य पूरा न करती हो, क्योंकि फल न लाने वाली डालियां फल लाने वाली डालियों का भोजन ले सकती हैं, इसलिए उन्हें दाख से काट दिया जाता है (आयतें 2, 6)। इसी प्रकार, मसीहियों के रूप में हमारा उद्देश्य है, फल लाना। यीशु ने कहा, ''मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे'' (आयत 8)। फल लाना एक विकल्प नहीं है। फल लाना दूसरे मसीही कार्यों का अतिरिक्त भाग नहीं है। फल लाना हमारा उद्देश्य है; यही तो मसीह के पीछे चलना है। यदि हम फल नहीं लाते, तो हम अपने होने का उद्देश्य खो देते हैं।

हमें क्या ''फल'' लाना है? नये नियम में ''फल'' शब्द का इस्तेमाल कई रूपों में किया गया है।[2] कुछ लोगों का मानना है कि यूहन्ना 15 में दिया गया ''फल'' ''आत्मा का फल'' ही है। पौलुस ने लिखा है कि ''आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम है'' (गलातियों 5:22, 23क)। इससे बहुत मेल खाते हुए, कुछ लोग ज़ोर देते हैं कि हम अपने जीवनों में मसीह जैसे गुणों को बढ़ाते हुए ''फल लाने'' की आज्ञा को पूरा करते हैं। अन्य इस बात पर ध्यान दिलाते हैं कि ''फल'' शब्द प्रभु के लिए जीने और काम करने के *सभी* सकारात्मक परिणाम हो सकते हैं। पौलुस ने कहा कि ''क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह है, और ... यदि शरीर में जीवित रहना ही मेरे

काम के लिए लाभदायक है तो मैं नहीं जानता, कि किस को चुनूं'' (फिलिप्पियों 1:21, 22)। अंग्रेज़ी की बाइबल किंग जेम्स का अनुवाद है, ''यह मेरे परिश्रम का फल है।''

बाइबल में ''फल'' शब्द का सामान्य उपयोग अपनी जाति के अनुसार फल लाना है (उत्पत्ति 1:11; लूका 1:42)। किसी ने कहा है कि सेब के पेड़ का फल सेब होता है, संतरे के पेड़ का फल संतरा और एक मसीही का ''फल'' एक और मसीही होना चाहिए। भौतिक संसार में, मनुष्य जाति से ''फूलो-फलो और पृथ्वी में भर'' जाने को कहा गया था (उत्पत्ति 1:28; उत्पत्ति 9:1, 7 भी देखें)। आत्मिक संसार में भी ऐसी ही चुनौती है। पौलुस ने लिखा है:

> सो हे मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिए मरे हुए बन गए, कि उस दूसरे के हो जाओ, जो मरे हुओं में से जी उठा: ताकि हम परमेश्वर के लिए फल लाएं (रोमियों 7:4)।

रोमियों 7:4 में ''फल'' शब्द का इस्तेमाल सामान्य अर्थ में किया जा सकता है, पर विवाह के उदाहरण से बच्चों के ''फल''-आत्मिक संतान अर्थात नये बनने वाले मसीहियों का सुझाव मिलता है। रोम की कलीसिया के नाम लिखते समय पौलुस स्वयं ऐसे ही फल की बात कर रहा होगा। उसने भाइयों को बताया कि वह उनसे इसलिए मिलना चाहता था ताकि ''जैसे मुझे और अन्यजातियों में फल मिला, वैसा ही तुम में भी मिले'' (रोमियों 1:13)।

यूहन्ना 15 के ''फल'' के विषय में, क्या यह आवश्यक है कि हम ऊपर दी गई सम्भावनाओं में से किसी एक को चुनें? क्या हम आत्मा का फल लाए बिना मसीही गुणों में बढ़ सकते हैं, जिससे सकारात्मक परिणाम निकलें? क्या हम खोए हुओं तक पहुंचने के प्रयास किए बिना मसीह जैसे बनकर आत्मा से परिपूर्ण हो सकते हैं? यीशु ने कहा कि वह ''खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया'' (लूका 19:10), और हमारे लिए ''उसके पद चिह्नों पर'' चलना आवश्यक है (1 पतरस 2:21)। हमें अपने विश्वास को बांटने के महत्व को समझना आवश्यक है, ताकि आत्माओं को बचाया जा सके।

इस प्रासंगिकता को मन में रखते हुए, इस पर विचार करें: दाख फल नहीं लाती, फल लाने का काम टहनियों का है। दाख टहनियों को उनका काम करने के *योग्य* बनाती है, पर फल टहनियों को ही लाना होता है। यदि टहनियां फल नहीं लातीं, तो कोई फल नहीं होगा। यदि आप और मैं खोए हुओं तक नहीं पहुंचते, तो कोई बचाया नहीं जाएगा।

नये नियम में, अपने विश्वास को दूसरों को बताना आज्ञा नहीं, बल्कि मसीही होने का स्वाभाविक फल माना जाता था। हम में से अधिकतर मत्ती द्वारा लिखित ग्रेट कमीशन से परिचित हैं: ''इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो'' (मत्ती 28:19)। इस आयत का एक मूल अर्थ यह है कि ''इसलिए जाकर, तुम सब जातियों को चेले बनाओ।''[3] अन्य शब्दों में, ''*जब* तुम जा रहे हो (या, जाकर), जिससे भी मिलो, उसे सिखाओ।'' यरूशलेम में

कलीसिया पर सताव होने के समय यही हुआ:

> ...यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा और प्रेरितों को छोड़ सब के सब यहूदिया और सामरिया देशों में तितर-बितर हो गए। ...
> जो तितर-बितर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे (प्रेरितों 8:1, 4)।

यदि हमें समझ हो कि हम क्या बता रहे हैं, तो हमारा दूसरों को बताना हमारे लिए *स्वाभाविक* होना चाहिए। हम यीशु में अपने विश्वास को बता रहे हैं, यानी हम सुसमाचार अर्थात खुशी की खबर बता रहे हैं। एक युवती, जिसकी अभी-अभी मंगनी हुई है, कहने की आवश्यकता नहीं है कि वह अपनी मंगनी की अंगूठी दिखाए। उसके लिए हर किसी को अपनी वह अंगूठी दिखाना *स्वाभाविक* है। नये-नये बने पिता से यह पूछने की आवश्यकता है कि क्या वह पिता बन गया-और निश्चय ही किसी दादी को अपने नये पोते की तस्वीरें दिखाने के लिए कहने की आवश्यकता नहीं है। उनके लिए सुसमाचार बताना ऐसे ही *स्वाभाविक* है। दुखों से भरे संसार में, संसार खुशी की खबर सुनने को तरसता है।[4] हमारे पास यीशु की खुशखबरी है! हमारे लिए उस खुशखबरी को दूसरों को बताना कितना स्वाभाविक होना चाहिए!

कोई पूछ सकता है, "कैसे? मैं अपना विश्वास किसी को कैसे बता सकता हूं? मैं यीशु के लिए दूसरों को जीतने के अर्थ में फल कैसे ला सकता हूं?" इस आयत में यह नहीं बताया गया कि कैसे, परन्तु इससे केवल यह संकेत मिलता है कि बताना आवश्यक है। अपने विश्वास को बताने के दर्जनों, बल्कि सैकड़ों अच्छे ढंग हैं। हम में से हर व्यक्ति अलग है; जो ढंग एक पर लागू होता है, हो सकता है कि वह दूसरे पर काम न करे।[5] आप जो भी ढंग इस्तेमाल करें, वह ढंग *जीवन* और *शिक्षा* दोनों से मेल खाता होना चाहिए। फिलिप्पियों 2:15, 16 में पौलुस ने इन दोनों कारकों को जोड़ दिया:

> ताकि तुम निर्दोष और भले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बने रहो, (जिन के बीच में तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकों की नाईं दिखाई देते हो)। कि मसीह के दिन मुझे घमण्ड करने का कारण हो, ...

(1) *जीवन।* सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से आपका जीवन विश्वासी मसीही जीवन होना आवश्यक है। सकारात्मक रूप से, आपका जीवन अच्छा, प्रेमी और दूसरों की सहायता करने वाला होना चाहिए। नकारात्मक रूप में आपको शुद्ध बने रहने के लिए अपने जीवन में से बुराई को दूर रखना चाहिए। जब तक आपका जीवन आपकी शिक्षा से मेल नहीं खाता, कोई आपकी बात को नहीं सुनेगा।[6]

(2) *शिक्षा।* आपका जीवन चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो आपके लिए सुसमाचार सिखाना आवश्यक है। कुछ लोग सोचते हैं कि जब तक उनका जीवन सच्चाई के अनुसार

है, उन्हें सच्चाई बताने की आवश्यकता नहीं है। क्या आप यीशु से अच्छे हैं? उसने केवल अपने जीवन के द्वारा ही फल नहीं लाया था। उसका जीवन सच्चाई था, पर उसने सच्चाई की शिक्षा भी दी। सिखाने का काम पत्र लिखकर, ट्रैक्ट देकर, फिल्म और वीडियो के द्वारा या किसी को समझाकर किया जा सकता है। महत्वपूर्ण यह नहीं है कि आप दूसरों को कैसे सिखाते हैं, बल्कि यह है कि आप उन्हें सिखाते हैं।

मैं इस विचार पर वापस आता हूं: यूहन्ना 15 के अनुसार, फल लाना ही मसीही जीवन है। यदि हम टहनियों के रूप में अपनी भूमिका के महत्व को पहचान लें, तो हम फल लाने की कोशिश करेंगे।

फल लाने का सम्बन्ध

फल लाने के बारे में मसीह की शिक्षा की मुख्य बात यह है कि हम *यीशु से अलग होकर* फल नहीं ला सकते। आयत 4 का आरम्भ "मुझ में बने रहो" से होता है।

हम दाख और इसकी टहनियों के बीच सम्बन्ध पर वैज्ञानिक भाषण दे सकते हैं। हम परासरण की प्रक्रिया पर बात कर सकते हैं कि किस प्रकार मिट्टी में से पानी दाख की जड़ों में से होता हुआ टहनियों में भोजन पहुंचाता है। हम फोटोसिंथेसिस पर बात कर सकते हैं जो पत्तों पर सूर्य के प्रकाश की क्लोरोफिल[7] पर कार्य है। परन्तु यह पाठ खेती-बाड़ी पर नहीं है, बल्कि सम्बन्ध पर एक प्रवचन है। आपको परासरण की प्रक्रिया और फोटोसिंथेसिस की समझ हो या न, पर आप यह अवश्य बता सकते हैं कि डाली को जीवन दाख के साथ जुड़े रहने से ही मिल सकता है। पिछले समय में डाली चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो गई हो, कितनी भी लम्बी या मोटी क्यों न हो, कितनी भी हरी-भरी या स्वस्थ क्यों न लगती हो, या कितनी भी मोहक क्यों न हो, यदि वह डाली दाख के साथ जुड़ी नहीं है, तो वह *मरी हुई* है।

मसीह के साथ हमारे सम्बन्ध में भी यही बात सच है: हमारे आत्मिक जीवन तथा विकास के लिए उसकी आवश्यकता है। हमें *उसमें* बपतिस्मा दिया जाता है (रोमियों 6:3-6; गलातियों 3:26, 27)। *उसमें* हम नई सृष्टि हैं (2 कुरिन्थियों 5:17)। सभी आत्मिक आशिषें *उसी में* हैं (इफिसियों 1:3)। *उसी में,* हमें छुटकारा मिला है (कुलुस्सियों 1:13, 14)।

हम में से कुछ लोग उस प्रकार आत्माओं को जीत क्यों नहीं रहे हैं, जैसे जीतना चाहिए? हम अपने विश्वास को दूसरों को बता क्यों नहीं रहे हैं? यह भी पूछा जा सकता है, कि हम आत्मिक उन्नति क्यों नहीं कर रहे हैं? हमारा जीवन भक्तिपूर्ण मसीही जीवन क्यों नहीं है? हम आराधना में विश्वास से क्यों नहीं जाते हैं? इन सभी प्रश्नों का उत्तर एक ही है: *मसीह के साथ हमारा सम्बन्ध सही नहीं है।* यीशु ने कहा, "जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, ..." (यूहन्ना 15:5ख)। सम्बन्ध सही होगा, तो हम फल अवश्य *लाएंगे।*

मुख्य बात सम्बन्ध ही है। मैं एक व्यक्तिगत उदाहरण देता हूं। मेरा ध्यान उस दिन की ओर जाता है जब मैं थका हुआ था, दिनभर मैं बहुत ही व्यस्त रहा था, और मुझे मेरी वित्तीय ज़िम्मेदारियों की चिंता भी थी। मेरी एक लड़की ने टेलीफोन कर परेशान होकर कहा,

"डैडी मुझे सहायता चाहिए! आपको मेरी मदद करनी ही होगी!" मैंने यह नहीं कहा कि "मैं बहुत थका हुआ हूं।" मैंने यह नहीं कहा कि "मैं बहुत व्यस्त हूं।" मैंने यह नहीं कहा कि "मेरे पास पैसे नहीं हैं।" मैंने यह भी नहीं कहा कि "मैं तुम्हारी सहायता कैसे करूं।" यदि मुझे पता नहीं था कि कैसे कर सकता हूं, तो मेरे लिए इसका हल ढूंढ़ना आवश्यक था। जैसे भी हो मुझे अपनी बेटी की सहायता करनी ही थी। क्यों? क्योंकि हमारा एक विशेष सम्बन्ध है।

इस समय प्रश्न यह है कि "यीशु के साथ हमारा क्या सम्बन्ध है?" अर्थात, क्या हमने मसीह में बपतिस्मा लिया है; और यदि लिया है तो क्या हम उसके लिए जी रहे हैं? अपनी पहली पत्री में, यूहन्ना ने यीशु में बने रहने की बात व्यक्तिगत आधार पर कही है। उसने कहा, कि जो मसीह में बना रहता है, वह वैसे ही चलेगा जैसे वह चलता था (1 यूहन्ना 2:6), अपने भाई से प्रेम रखेगा (2:9, 10) और पापपूर्ण जीवन नहीं बिताएगा (3:6)। यदि यीशु के साथ हमारा सम्बन्ध सही है, तो हम फल लाने का *कोई ढंग ढूंढ़* ही लेंगे।

यूहन्ना 15:1-12 फल न लाने के परिणामों पर कुछ गंभीर बातें कहता है। आयत 2 में यीशु ने कहा, "जो डाली मुझ में है और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है।" आयत 6 "आग में झोंक" देने की बात बताती है। परन्तु यह आयत यह नहीं कहती कि हम नरक में इसलिए जाएंगे कि हम आत्माओं को बचाने वाले नहीं हैं या हम दूसरी तरह से फल लाने में नाकाम रहे हैं। बल्कि यह सिखाती है कि हमारा नाश इसलिए होगा, *क्योंकि हमारा सम्बन्ध यीशु के साथ सही नहीं है।* आयत 6 फिर से देखें: "*यदि कोई मुझ में बना न रहे,* तो वह डाली के समान फैंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं।"

अपने विश्वास को आगे न बताने वाले कुछ लोग बहाने ढूंढ़ते हैं: वे कहते हैं, "मुझे शर्म आती है," या "लोग सुनते नहीं हैं," या "मैं अच्छा प्रचारक नहीं हूं," या "मुझे अधिक ज्ञान नहीं है," या "मेरे पास समय नहीं है।" वे *कारण* ढूंढ़ते हैं जबकि उन्हें *सम्बन्ध* ढूंढ़ना चाहिए। पौलुस लिखता है, "*जो मुझे सामर्थ देता है उस में* मैं सब कुछ कर सकता हूं" (फिलिप्पियों 4:13)।

फल लाने की शर्तें

अब जबकि हमने फल लाने की मुख्य बात अर्थात सच्ची दाखलता के साथ अपने सम्बन्ध को स्थापित कर लिया है, आइए कुछ समय वचन में से फल लाने की कुछ व्यावहारिक बातों का पता लगाने में लगाते हैं। कुछ लोगों का विचार है कि सुसमाचार के योग्य फल लाना अर्थात दूसरों को सुसमाचार बताने के लिए धारा-प्रवाह बोलने वाला अर्थात एक अच्छे सेल्समैन का गुण होना या बहुत बुद्धिमान होना आवश्यक है। इस आयत में ऐसा कोई सुझाव नहीं है, बल्कि यह चार पूर्व शर्तें बताती है।

(1) *विनम्र मन।* परमेश्वर किसान है (यूहन्ना 15:1)। वह दाख की बारी का मालिक है। वह फल लाने वाली डालियों को भी छांटता है (आयत 2)। हम सब में कुछ बुरी बातें

होती हैं, जिनको छांटा जाना आवश्यक है! मेरा उसके और यीशु के अधीन होना आवश्यक है। मसीह ने कहा, ''यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे; जैसा कि मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं'' (आयत 10)।

(2) *सतर्क मन।* यीशु ने अपने चेलों को बताया, ''तुम तो उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है, शुद्ध हो'' (आयत 3)।''शुद्ध'' शब्द उसी यूनानी शब्द से लिया गया है, जिससे ''छांटना'' (आयत 2)। परमेश्वर का ''छांटने का औज़ार'' मुख्यतया उसका वचन है। मसीह ने उन ग्यारह को बताया, ''यदि ... मेरा *वचन* तुम में बना रहे, तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा'' (आयत 7)।

फल लाने के लिए, विशेषकर सुसमाचार के योग्य फल लाने के लिए परमेश्वर के वचन का ज्ञान होना आवश्यक है। बाइबल अध्ययन तथा आत्माओं को जीतना साथ-साथ चलते हैं। यदि मुझे वचन का ज्ञान होगा तो मैं इसे दूसरों को अवश्य बताना चाहूंगा; और यदि मैं दूसरों को बताता हूं, तो मुझे इसे और सीखना पड़ेगा। यीशु ने कहा, ''धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे'' (मत्ती 5:6)। स्वादिष्ट खाना बनाने के लिए कठिन प्रयास करना आवश्यक है, और परमेश्वर के वचन के ''स्वाद'' को बढ़ाने के लिए प्रभु के लिए व्यस्त रहना और विशेषकर सच्चाई बताते रहना आवश्यक है।

(3) *समर्पित मन।* हमें यीशु के साथ बने रहकर अपने आप को समर्पित करना आवश्यक है। यूहन्ना 15 में उसका संदेश है ''मुझ में बने रहो'' (आयत 4)। आयत 7 में उसने कहा, ''*यदि* मुझ में बने रहो,'' तो तुम्हें विशेष आशिषें मिलेंगी। हमने देखा है कि कई प्रकार से प्रभु के साथ हमारा सम्बन्ध दाख के साथ टहनियों वाला है। परन्तु एक पहलू इस तुलना में नहीं है: डालियों की अपनी कोई पसन्द नहीं होती कि दाख के साथ बने रहना है या नहीं-पर हम अपनी इच्छा के अनुसार करते हैं।

बाइबल विश्वासी व्यक्ति की सुरक्षा के बारे में बताती है, परन्तु विश्वास से फिरने की असम्भावना की बात नहीं। यूहन्ना 15 सिखाता है कि दाखलता के साथ जुड़े होने पर भी, मुझे काटकर ''आग में झोंका'' जा सकता है। यदि मैं बचा रहना चाहता हूं, तो मेरे लिए प्रभु में *बने रहना* आवश्यक है। न्याय के दिन, मैं बपतिस्मे का सर्टिफिकेट[8] निकालकर यह नहीं कह सकता, ''देखो, मैंने फलां-फलां दिन बपतिस्मा लिया था। आपको मुझे अन्दर *रखना ही* पड़ेगा।'' बपतिस्मा उद्धार के लिए आवश्यक है, पर प्रभु के विश्वासयोग्य बने रहना भी उतना ही आवश्यक है (प्रकाशितवाक्य 2:10)।''मसीह में'' बपतिस्मा लेना ही नहीं (रोमियों 6:3, 4; गलातियों 3:26, 27) बल्कि ''मसीह में'' *बने रहना* भी उतना ही आवश्यक है (रोमियों 3:24; 6:11, 23; 8:1, 39; 2 कुरिन्थियों 2:14; फिलिप्पियों 4:7, 19; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16)।

(4) *दृढ़ निश्चय।* डालियों का स्वभाव बढ़ना है। बढ़ना बन्द करते ही, वे मर जाती हैं। किसी ने लिखा है, ''यदि पेड़ की चोटी पर नई टहनियां नहीं हैं, तो समझो मृत्यु ने इसकी जड़ों पर हमला कर दिया है।'' मुझे और आपको यह निश्चय करना आवश्यक है कि मसीही होने के नाते परमेश्वर की सहायता से हम अवश्य *बढ़ेंगे।* विशेषकर, हमें फल लाने के विषय

में बढ़ने की आवश्यकता है। यूहन्ना 15 ''फल'' (आयत 2) की बात करता है, परन्तु ''*बहुत* फल'' (आयतें 5, 8) और ''*और* फल'' (आयत 2) की भी बात करता है।

फल लाने के परिणाम

प्रवचन के अन्त में, आइए फल लाने के कुछ सकारात्मक परिणामों पर विचार करते हैं।[9]

हम आत्मिक रूप में बढ़ेंगे। हम शुद्ध होंगे; हम ''बहुत सा फल'' (आयतें 5, 8) बल्कि ''और फल'' लाएंगे (आयत 2)। इस प्रवचन में सुसमाचार के योग्य फल लाने पर ज़ोर दिया गया है। आत्मा बचाने से बढ़कर आत्मिक विकास की कोई और बात मसीही कार्य में मुझे नहीं लगती।

हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर मिलेगा (आयत 7)। यदि प्रार्थना का आपका जीवन वैसा नहीं है जैसा होना चाहिए, तो यीशु के साथ अपने सम्बन्ध की समीक्षा करें और अपने आप से पूछें कि क्या आप फल ला रहे हैं या नहीं।

परमेश्वर की महिमा होगी (आयत 8)। याद रखें कि दाख की बारी उसकी है और वह ही किसान है। टहनियों के फल लाने से, उसकी ही महिमा होगी।

हम अपने आप को यीशु के सच्चे चेलों के रूप में दिखाएंगे (आयत 8)।

हमें आनन्द मिलेगा (आयत 11)। पौलुस ने परिवर्तित होने वालों को अपना ''आनन्द और मुकुट'' कहा (फिलिप्पियों 4:1)। यूहन्ना ने कहा कि उसे ''इससे बढ़कर और कोई आनन्द नहीं'' कि वह यह सुने कि उसके ''बच्चे सत्य पर चलते हैं'' (3 यूहन्ना 4)।

आत्माएं बचाई जाएंगी– हमारी और दूसरों की!

सारांश

मुझे एक सक्रिय मण्डली का भाग बनना अच्छा लगता है। ऐसे मसीही लोगों के साथ होना जो प्रसन्न और व्यस्त हैं, कितना रोमांचकारी है! तौ भी मुझे डर है कि हम बहुत से ''प्रोजेक्टों'' में व्यस्त होकर फंस सकते हैं, जिससे हमारा ध्यान इस बात की ओर न जाए कि प्रभु की कलीसिया के रूप में हमारे लिए क्या करना आवश्यक है। कई बार हम इस बात को भूल जाते हैं कि हमारे होने का कारण परमेश्वर के लिए फल लाना है। फल लाने का और कोई विकल्प नहीं है। परमेश्वर हम सब की सहायता करे कि हम उसके लिए फल ला सकें![10]

टिप्पणियां

[1]इस प्रवचन में ज़ोर आत्मा जीतने पर है, परन्तु इस प्रस्तुति को आत्मा के फल या मसीह जैसे जीवन जीने की आवश्यकता पर ज़ोर देने के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है। [2]''फल'' शब्द का इस्तेमाल कई जगह होता है। इसका अर्थ किसी दूसरे के जीवन (मत्ती 3:10; 7:16–20); विश्वासी, उपजाऊ मसीही

जीवन का परिणाम (इफिसियों 5:9; फिलिप्पियों 1:11; कुलुस्सियों 1:10; इब्रानियों 12:11; याकूब 3:17, 18); यह किए जाने वाले प्रयास के परिणाम या नतीजे के लिए देखा जा सकता है (यूहन्ना 4:36; 12:24)। ''पहला फल'' वाक्यांश (रोमियों 8:23; 1 कुरिन्थियों 15:20, 23; 16:15) प्रभु को समर्पित किए जाने वाले पहले फलों (उपज का फल) से सम्बन्धित पुराने नियम पर आधारित अलंकारिक भाषा है। [3]एलफ्रेड मार्शल, *द इंटरलिनियर ग्रीक- इंग्लिश न्यू टैस्टामेंट,* दूसरा संस्करण (लंदन: सैमूएल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1958), 136. [4]आप बात करने के समय टीवी और समाचार पत्रों में छाई हुई ''बुरी'' खबर का हवाला दे सकते हैं। [5]इस वाक्य का इस्तेमाल जहां आप प्रचार कर रहे हैं उसके अनुकूल करें। यदि आप किसी विशेष ढंग को प्राथमिकता देते हैं, तो इसके बारे में एक-दो शब्द कहें। आप क्लास में यह भी बता सकते हैं कि सुसमाचार के प्रचार का कोई विशेष ढंग किस प्रकार इस्तेमाल किया जाए। [6]मैं यहां एक व्यक्तिगत उदाहरण जोड़ता हूं: मैं अपने गंजे सिर पर हाथ मारते हुए कहता हूं, ''मेरे लिए बाल उगाने का टौनिक गारंटी के साथ बेचना कठिन होगा।'' [7]''क्लोरोफिल'' यूनानी शब्द का लिप्यंतरण है जिसका अर्थ है ''हरा।'' यह पत्तों में हरा रंग देने के बारे में है। [8]मेरे अपने बपतिस्मे का ऐसा कोई दस्तावेज मेरे पास नहीं है, पर जिन मण्डलियों में मैंने काम किया है, उनमें हम बपतिस्मा लेने वाले को बपतिस्मे का प्रमाण-पत्र देने लगे हैं। जहां आप रहते हैं यदि वहां ऐसा नहीं होता, तो यह वाक्य जोड़ लें। [9]दी गई आयतें पढ़ी जा सकती हैं, और भागों को विस्तार दिया जा सकता है। [10]निमन्त्रण देते हुए, एक पश्चात्तापी विश्वासी को मसीह में बपतिस्मा लेने की आवश्यकता पर ज़ोर देना और फिर मसीह में बने रहने की आवश्यकता पर ज़ोर देना आवश्यक है। जिस किसी ने बपतिस्मा नहीं लिया या प्रभु से दूर हो गया है, उसे उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करें।